मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

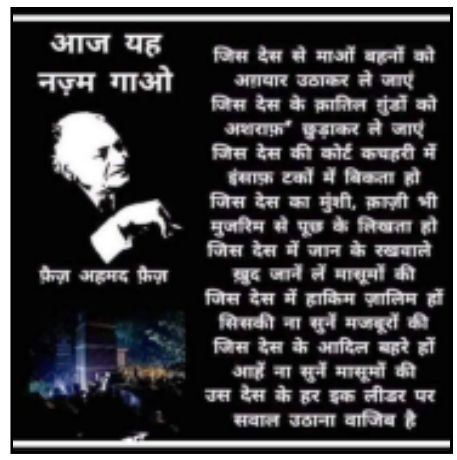

पटरियों के किनारे शौच से कब आज़ाद होगा 'आज़ाद नगर' 2
गरीब लोगों की सुरक्षा के लिए नहीं है पुलिस 4
अंकिता भंडारी हत्याकांड 5
फतेहाबाद में विपक्ष की एकता 'भारत जोड़ो' का प्रतिफलन 6
हरियाणा सरकार के 93 विभागों में 1 लाख 82 हजार 497 पद रिक्त पड़े हैं 8

वर्ष 36 | अंक 47 | फरीदाबाद | 2 अक्टूबर-8 अक्टूबर 2022 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा का खटराग सुनकर

भाजपा विधायक नरेन्द्र गुप्ता ने खोली तथाकथित विकास की पोल

फ़रीदाबाद (म.मो.) जनता की शिकायतों व समस्याओं का निवारण करने के नाम पर सरकार की ओर से हर ज़िले में मासिक कष्ट निवारण समिति की बैठक आयोजित की जाती है। इस बैठक में ज़िले के तमाम उच्चाधिकारी तथा विधायक उपस्थित रहते हैं। इसकी अध्यक्षता हरियाणा सरकार के किसी न किसी मंत्री द्वारा की जाती है। यहां की अध्यक्षता उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला करते हैं।

कष्ट निवारण की इस नौटंकी में गिनती की 10-12 वे शिकायतें रखी जाती हैं जिन्हें उपायुक्त इसमें रखने लायक समझें। यानी कि ये समझा जाय कि उपायुक्त द्वारा प्रेषित समस्याओं के अलावा और कोई समस्या नहीं है। इन समस्याओं पर सुनवाई के बाद मंत्री द्वारा सम्बन्धित अधिकारियों को दिशा निर्देश देकर पल्ला झाड़ दिया जाता है।

दिनांक 26 सितम्बर को हुई ऐसी ही एक मीटिंग नौटंकी से हटकर कुछ हकीकत की ओर बढ़ गई। हुआ यूं कि मीटिंग के दौरान एनआईटी के कांग्रेसी विधायक नीरज शर्मा ने अपने क्षेत्र के जीवन नगर में अमृत योजना के तहत 6 साल पहले डाली गई सीवर लाइन के ऊपर सड़क नहीं बनाई जो सीवर डलने से पहले बनी हुई थी। बात तो बड़ी वाजिब थी, लेकिन भाजपाई विधायक नरेन्द्र गुप्ता को यह न भाइ। उन्हें लगा कि नीरज शर्मा सरकार पर हमला कर रहे हैं। वे तुरन्त इसके विरोध में उठ खड़े हुए और बोले कि समस्या

नीरज शर्मा
विधायक
एनआईटी

नरेन्द्र गुप्ता
विधायक
फरीदाबाद

रखने का यह कोई तरीका नहीं है। जाहिर है कि उनका मतलब था कि समिति के सामने केवल वही शिकायतें आयें जो उपायुक्त द्वारा प्रस्तुत की जाय।

नीरज भला कब चूकने वाले थे? उन्होंने झट से कहा कि उन्हें वह किताब दिखाई जाय जिसमें लिखा हो कि विधायक अपने क्षेत्र की समस्या नहीं रख सकता। इस वाद-विवाद के दौरान नरेन्द्र गुप्ता यह भूल बैठे थे कि वे सरकारी विधायक हैं। झोंक-झोंक में उन्होंने शहर के सारे तथाकथित विकास की पोल खोल कर रख दी। उनका कहना था कि इस बैठक में यदि नीरज शर्मा द्वारा उठाये गये मुद्दों पर ही समय बर्बाद किया जायेगा तो ज़िले भर की अन्य समस्याओं का क्या होगा?

विधायक गुप्ता जो शहर की विभिन्न विकास एजेंसियों (नगर निगम स्मार्ट सिटी कम्पनी, एफएमडीए तथा 'हूडा') के काम-काज एवं कार्यशैली से काफ़ी परेशान रहते हैं, बूरी तरह से फट पड़े। उन्होंने शहर भर की तमाम टूटी व खड्डेदार सड़कों, उन पर होते जलभराव, उफनते सीवर तथा गंदगी से बजबजाते शहर का विवरण देकर अपनी ही सरकार की फजीहत कर डाली। भाजपा की जो सरकार शहर में हो चूके भारी-भरकम 'विकास' तथा 'सौंदर्यीकरण' का ढोल पीटते नहीं अघाती, उसी ढोल को गुप्ता जी ने सरे राह फाड़ दिया।

दरअसल वे कोई सरकार की बुराई तो नहीं ही करना चाह रहे होंगे, वे तो केवल नीरज शर्मा के मुकाबले अपने क्षेत्र की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल कराना चाहते थे। दूसरी ओर नीरज शर्मा ने एक परिपक्व एवं सधे हुए राजनीतिज्ञ की तरह गुप्ता जी से उलझने की बजाय उनका सम्मान करते हुए उनके मुद्दों का भी समाधान करने की बात कही।

अध्यक्षता कर रहे उपमुख्यमंत्री चौटाला ने बड़ी शालीनता के साथ मौके की नजातक को समझते हुए दोनों को शान्त कराया तथा जीवन नगर में सड़क न बनाने वाले एक्सईएन को तुरन्त प्रभाव से निलम्बित करने के आदेश दिये। 6 वर्ष पुराने मामले पर आज कार्रवाई की बात की जा रही है। इससे ज्यादा हास्यास्पद और क्या हो सकता है? पता नहीं वह एक्सईएन आज नौकरी में है भी या रिटायर हो गया? यदि नोकरी में होगा भी तो उसके पास भी बहानों की कोई कमी नहीं होगी।

चौटाला की मुस्कान चुभी खट्टर को तो भेजा रोहतक

ग्रीवेंस कमेटी की मीटिंग के दौरान जब भाजपा विधायक नरेन्द्र गुप्ता ने अपनी ही पार्टी की फजीहत कर डाली तो अध्यक्षता कर रहे दुष्यंत चौटाला अपने भीतर छिपी खुशी को न रोक पाये। एक कुटिल मुस्कान के साथ उन्होंने विधायक गुप्ता को शांत तो कर दिया, लेकिन उनकी यह मुस्कान मुख्यमंत्री खट्टर को चुभ गयी।

दुष्यंत
चौटाला
उपमुख्यमंत्री

गठबंधन की मजबूरी के चलते खट्टर कुछ अधिक कर पाने की स्थिति में तो नहीं है लेकिन उन्होंने चौटाला को फरीदाबाद की बजाए रोहतक की ग्रीवेंस कमेटी सौंप दी। विदित है कि किसान आंदोलन के बाद चौटाला की कभी हिम्मत नहीं हुई कि व रोहतक तथा उस दिशा के अन्य क्षेत्रों में प्रवेश कर सकें। आगामी ग्रीवेंस कमेटी की मीटिंग चौटाला रोहतक में देखेंगे और फरीदाबाद की कमेटी की अध्यक्षता खुद मुख्यमंत्री खट्टर करेंगे। राजनीतिक हलकों में इसको एक अन्य दृष्टि से भी देखते हुए कहा जा रहा है कि चौटाला पृथला विधानसभा चुनाव क्षेत्र को अपने लिए कुछ बेहतर मानकर यहां से चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं। दूसरी और यह भी चर्चा है कि खट्टर महोदय करनाल छोड़कर बड़खल क्षेत्र से अपनी किस्मत आजमा सकते हैं।

मरे हुए बदमाश से भी इतना डरती है पुलिस, अवैध कब्जे हटाने के लिये दो डीसीपी, तीन एसीपी व कई मैजिस्ट्रेट लगाने पड़े

फ़रीदाबाद (म.मो.) सरकार का कायराना चरित्र समझने के लिये बदमाश, नशा व्यापारी लाला उर्फ बिजेन्द्र के अवैध कब्जों को हटाने के तरीके से देखा जा सकता है। लाला के जीते जी सरकार की हिम्मत नहीं पड़ी कि उसके द्वारा कब्जाई गई केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की ढाई एकड़ जमीन को उसके कब्जे से खाली करा सकती। इस ज़मीन पर दसियों वर्ष पूर्व उसने तीन मकान व 18 दुकाने तथा तीन बड़े गोदम आदि बना रखे थे।

करीब आठ माह पूर्व संदिग्ध हालात में हुई लाल की मौत के बाद प्रशासन ने उक्त कार्रवाई करने की हिम्मत जुटाई। दर्जनों अफ़सरों के अलावा बड़ी संख्या में पुलिस बल को ऐसे तैनात किया गया था जैसे कि बहुत बड़े खुंखार आतंकवादी गिरोह से पुलिस का मुकाबला होने वाला है। थाना मुजेसर के मछली मार्केट क्षेत्र से लाला अपना नशे का थोक व्यापार चलाता था। स्थानीय एवं सीआईए पुलिस वालों का वहां आना-जाना लगा रहता था। अक्सर वहां एक पीसीआर जिप्सी भी तैनात रहती थी। इस सबके बावजूद उसका धंधा खूब फल-फुल रहा था।

पुलिस के द्वारा पकड़े जाना, जेल जाना व छूट कर आना उसके लिये आम बात

शर्मनाक : इतना बड़ा लश्कर एक मर चुके बदमाश से निपटने के लिए

थी। अपने पुलिस मित्रों के सहयोग से उसने कानून के साथ एक खिलौने की तरह खेलना अच्छी तरह सीख लिया था। इसी के चलते उस पर विभिन्न धाराओं में 32 मुकदमे दर्ज थे जिनकी उसे कोई परवाह न थी। अपने काम को बढावा देने के लिये उसने अपने भाई कन्हैया जिस पर 21 मुकदमे, साली पुजा पर सात, पत्नी पर तीन तथा मां पर भी एक मुकदमा दर्ज करा कर, अपने धंधे में जोड़ रखा था।

जिस बेखौफ ढंग से वह अपराध जगत में खुल कर खेल-कूद रहा था और पूरा शासन-प्रशासन उसके सामने नतमस्तक रहा उसके चलते कोई भी जनसाधारण उसके विरुद्ध मुंह खोलने की हिम्मत नहीं कर सकता था। उसी के चलते वह लगातार एक के बाद एक अवैध कब्जे करने में जुटा रहा। क्या उस समय किसी सरकारी कर्मचारी अधिकारी को वह सब नजर नहीं आ रहा था?

जाहिर है कमजोर प्रशासन के चलते किसी की हिम्मत उसे छेड़ने की नहीं पड़ती थी। दिनांक 27 सितम्बर को जितने बड़े लाव लस्कर के साथ प्रशासन ने उसके अवैध कब्जों को ध्वस्त किया है उसने वास्तव में ही यह साबित कर दिया है कि सारा प्रशासन उससे कितना खौफ़ खाता था।